GST 2 लाख Cr

बजट

(Budget)

- किसी भी अर्थव्यवस्था में सरकार के आगामी वर्ष के आय और व्यय के ब्यौरे को बजट कहते हैं।
- बजट फ्रेंच भाषा के बुजेट (Bougeut) शब्द से बना है जिसका अर्थ होता है चमड़ा का थैला।
- 1773 ई० में ब्रिटेन के प्रथम प्रधानमंत्री रॉबर्ट वालपोल ने पार्लियामेन्ट में वित्तीय प्रस्ताव पेश करने हेतु एक चमड़े के थैला खोलकर उससे संबंधित कागजात निकाला तो संसद सदस्यों ने मजाक में इसे जादू के थैले के अर्थ में बजट खुल गया, बजट खुल गया कहा। इसके बाद वार्षिक आय-व्यय के प्रस्ताव के लिए बजट शब्द का प्रयोग होने लगा।

- भारत का पहला बजट लार्ड कैनिंग के समय 7 अप्रैल, 1860 को तत्कालीन वित्तमंत्री जेम्स विल्सन ने प्रस्तुत किया। इसलिए जेम्स विल्सन को भारत में बजटीय प्रणाली का जनक कहा जाता है।
- स्वतंत्र भारत का पहला बजट 26 नवम्बर, 1947 को पहले वित्त मंत्री R.K. सन्मुखम् सेट्ठी द्वारा पेश किया गया था।
- गणतंत्र भारत का पहला बजट 1950 जॉन मेथाई ने पेश किया।

भारत के तीन प्रधानमंत्री जिन्होंने प्रधानमंत्री पद पर रहते हुए बजट पेश किए–

1. जवाहरलाल नेहरू
2. इंदिरा गांधी
3. राजीव गांधी।

- भारत की **पहली महिला वित्त मंत्री** इंदिरा गांधी, जबकि पहली पूर्णकालिक महिला वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण हैं।
- **सर्वाधिक बजट प्रस्तुत करने का श्रेय** मोरारजी देसाई को जाता है। इन्होंने 10 बार (8 बार नियमित, 2 बार अंतरिम) बजट प्रस्तुत किए।
- **प्रारम्भ में रेल बजट एवं आम बजट** एक साथ ही प्रस्तुत किया जाता था लेकिन 1924 ई० में एकवर्थ समिति के सिफारिश पर आम बजट को रेल बजट से अलग कर दिया तथा 2016 में पुनः रेल बजट एवं आम बजट को मिला दिया गया।
- भारत में बजट प्रस्तुत 2017 से 1 फरवरी को संसद में पेश किया जाता है।
- बजट को तैयार कराने का काम प्राक्कलन समिति करती है।
- बजट का टीवी पर प्रसारण 1992 से प्रारम्भ हुआ।

- बजट प्रस्तुत करने का अधिकार राष्ट्रपति को है किन्तु वे वित्तमंत्री से प्रस्तुत करवाते हैं।
- बजट प्रस्तुत करने की चर्चा संविधान में नहीं है बल्कि इसके स्थान पर वार्षिक वित्तीय विवरण शब्द की चर्चा है। एक वर्ष के केन्द्रीय बजट को वार्षिक वित्तीय विवरण [Annual Financial Statement (AFS)] कहा जाता है।

> अनु० 112

- इसमें बजट के तहत वित्तमंत्री भिन्न-भिन्न कार्य के योजना को प्रस्तुत करते हैं।

> अनु० 113

- इनमें प्राक्कलन के तहत खर्च का विवरण दिया जाता है।

- अनु० 114
- विनियोग विधियक के तहत धन निकालने का प्रस्ताव रखा जाता है। जबतक विनियोग विधेयक पारित नहीं हो जाता है तबतक संसद से धन नहीं निकाला जा सकता है। इसी कारण संसद को राष्ट्रीय धन (कोष) का रक्षक कहते हैं।
- अनु० 115
- इसमें अतिरिक्त अनुदान के तहत प्राक्कलन द्वारा दिए गए पैसे घट जाने पर पैसा निकाला जाता है।
- अनु० 116
- इसमें लेखानुदान के द्वारा अग्रिम राशि निकाल ली जाती है।

112 = बजट (चर्चा) → Airport

113 = प्रक्रम (धन का विवरण) = 20,000 cr

114 = विनियोग (संवाद) = ✓

115 = अतिरिक्त अनुदान = (महंगाई Extra धन)

बजट के प्रकार

1. शून्य आधारित बजट

- जब बजट में पिछला लेन-देन को छोड़कर एकदम नए सिरे से बजट बनाया जाता है तो उसे शून्य आधारित बजट कहते हैं।
- भारत में शून्य आधारित बजट 1987-88 ई. में राजीव गांधी ने लाया तथा विश्व में शून्य आधारित का प्रथम प्रयोग 1977 ई. में अमेरिका के जिमी कास्टर ने किया।
- शून्य आधारित बजट के जनक अमेरिका के पिटर फायर थे। भारत में शून्य आधारित बजट सर्वप्रथम आंध्रप्रदेश में अपनाया गया।

2. जेन्डर बजट

- जिस बजट में स्त्री पुरुष के लिए अलग से कुछ प्रावधान हो जेन्डर बजट कहलाता है।
- 2001 में महिला शक्तिकरण के बाद जेन्डर बजट को अधिक बढ़ावा दिया गया।
- इसका सबसे पहला प्रयोग 1982 में ऑस्ट्रेलिया में किया गया था।

3. संतुलित बजट

- वैसा बजट जिसमें आय तथा व्यय बराबर हो संतुलित बजट कहलाता है।

4. आउट कम बजट

- जब सरकार पैसा को खर्च करती है उस धन द्वारा किए गए कार्य का रिपोर्ट कार्ड (प्रगति) को आउटकम बजट कहते हैं।
- इस बजट की शुरूआत श्री पी.चिदम्बरम ने 2005 ई. में किया।

➢ लैफर वक्र (Laffer Curve)

☛ इसका प्रतिपादन अमेरिकी अर्थशास्त्री ऑथर लैफर द्वारा किया गया जो कर से राजस्व की प्राप्ति और कर की दर के बीच संबंध को दर्शाता है।

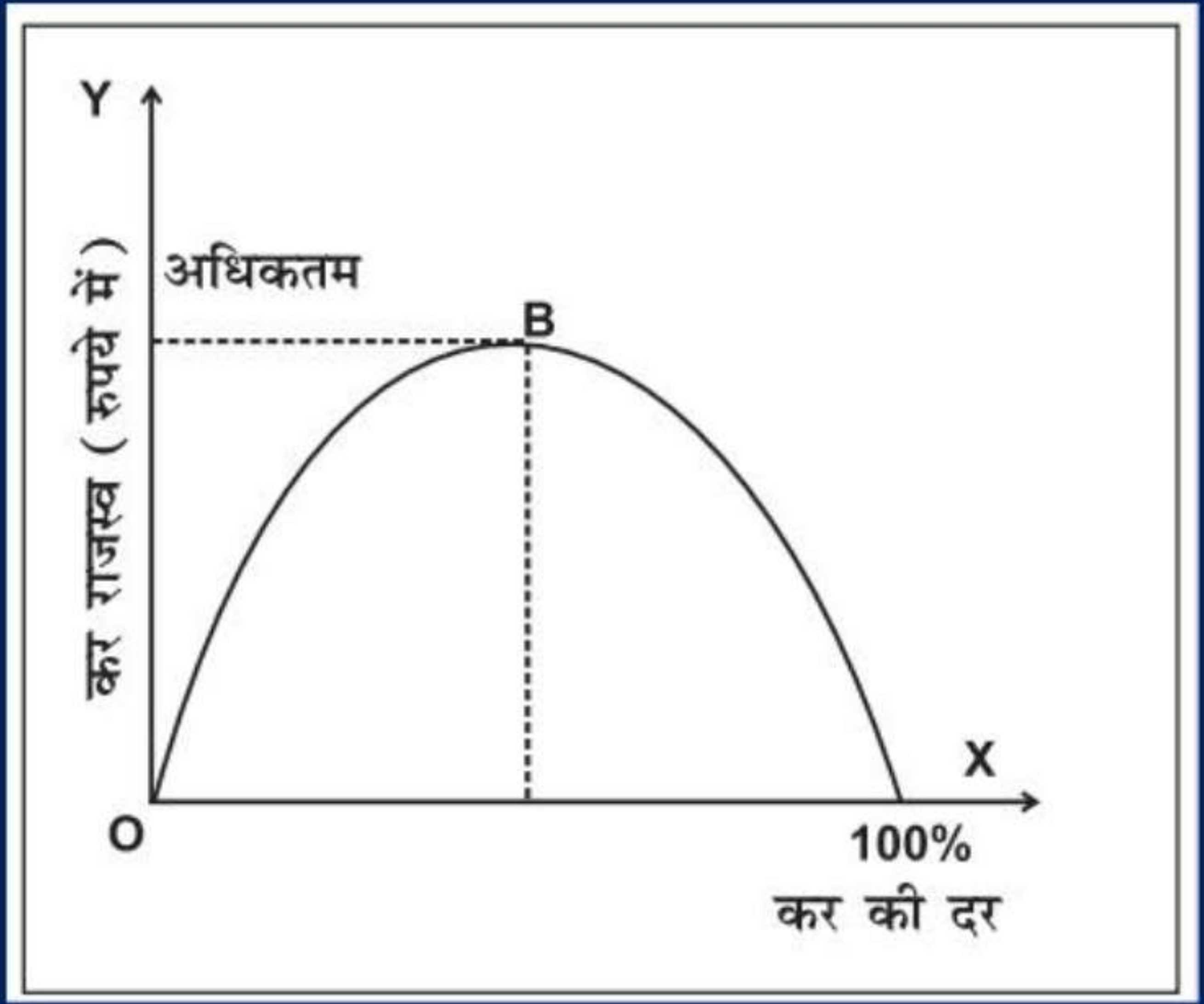

लोक राजस्व (Public Finance)

- सरकारी लेनदेन को लोक राजस्व कहते हैं।

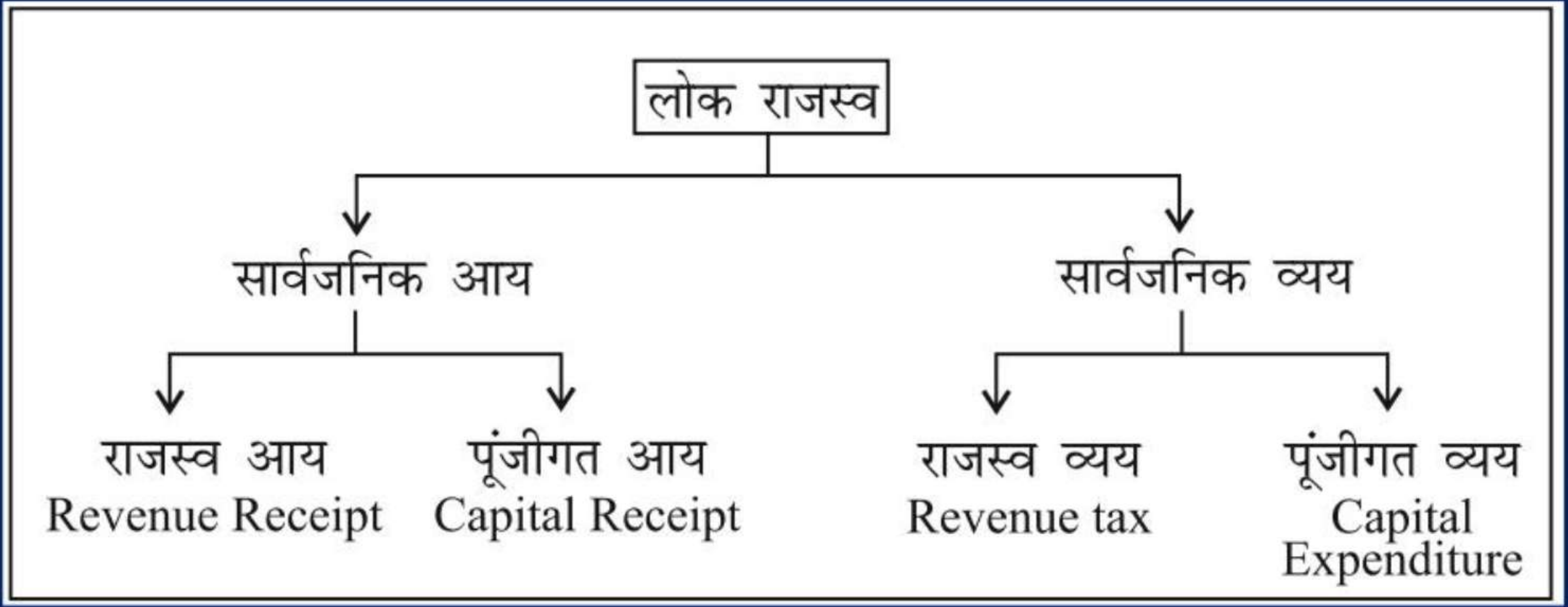

➢ सार्वजनिक आय (Public Revenue)

- सरकार के कुल आय को सार्वजनिक आय कहते हैं।

  यह दो प्रकार का होता है–

  1. राजस्व आय

- वैसा आय जिसे सरकार लौटाती नहीं है, राजस्व आय कहलाता है अर्थात् इसपर सरकार की देनदारी (ऋणभार) शून्य रहता है।
- केन्द्र सरकार के राजस्व का सबसे बड़ा स्रोत निगम कर है जबकि राज्य सरकार के राजस्व का सबसे बड़ा स्रोत बिक्री कर है।

  2. पूंजीगत आय

- सरकार का वैसा धन जिसे सरकार को लौटाना पड़े अर्थात् जिसपर सरकार की देनदारी रहती है।

Ex. :– बैंक तथा बॉन्डपेपर के रूप में जमा धन।

Remark :– सरकार अपने पूंजीगत आय को बनाए रखने के लिए **cashless** पर विशेष जोर दे रही है।

➤ सार्वजनिक व्यय (Public Expenditure)

☞ सरकार के कुल व्यय को सार्वजनिक व्यय कहते हैं।

यह दो प्रकार का होता है–

1. पूंजीगत व्यय

☞ यह एक वर्ष में प्रारम्भ होकर कई वर्षों तक धीरे-धीरे होता रहता हैं यह बहुत बड़ा व्यय होता हैं इसके द्वारा ढ़ाचागत विकास होता है।

Ex. :– सड़क, पुल, Airport।

2. राजस्व व्यय

☞ यह व्यय अल्पकालीन तथा छोटा होता है, जिस वर्ष यह प्रारम्भ होता है उसी वर्ष समाप्त हो जाता है।

Ex. :– सहायता राशि, सब्सिडी, etc.

➢ **घाटा (Deficite)**

☞ जब व्यय आय से अधिक हो जाए तो उसे घाटा कहते हैं। घाटा कई प्रकार का होता है।

1. राजस्व घाटा = राजस्व व्यय – राजस्व आय
2. पूंजीगत घाटा = पूंजीगत व्यय – पूंजीगत आय
3. सार्वजनिक घाटा = सार्वजनिक व्यय – सार्वजनिक आय

सार्वजनिक घाटा = पूंजीगत घाटा + राजस्व घाटा

Note :– सार्वजनिक घाटा को बजट घाटा कहते हैं।

➢ राजकोष घाटा (Fiscal Deficite)

- जब बजट घाटा में ऋणभार को जोड़ देते हैं तो उसे राजकोषीय घाटा कहते हैं।

Note :– राजकोषीय घाटा सबसे प्रमुख घाटा हैं। जिस देश का राजकोषीय घाटा जितना अधिक होगा, उस देश की प्रगति में उतनी अधिक बाधा आएगी।

➢ प्राथमिक घाटा (Primary Deficit)

- राजकोषीय घाटा में ब्याज घटाने पर प्राप्त घाटा को प्राथमिक घाटा कहते हैं।

प्राथमिक घाटा = राजकोषीय घाटा – ब्याज भुगतान
राजकोषीय घाटा = प्राथमिक घाटा + ब्याज भुगतान

- **मौद्रिक घाटा (Monetary Deficit)**
- नए नोट को छपने पर आए खर्च करने के कारण लगने वाला घाटा, मौद्रिक घाटा कहलाता है। यह तभी होगा जब सरकार अत्यधिक नोट छापे या नोट बदल दें।
- **योजनागत व्यय**
- वैसा व्यय जिसका अनुमान पहले से ही लगाया जा चुके हो उसे योजनागत व्यय कहते है।

  Ex. :– वेतन, विकासात्मक परियोजनाएं।
- **गैर योजनागत व्यय**
- वैसा व्यय जिसका पूर्व अनुमान सरकार को न हो, गैर योजनागत व्यय कहलाता है।

  Ex. :– सहायतता राशि, सब्सिडी, रक्षा व्यय।